महाबली

मूल : प्रकाश पर्येकार

अनु : डॉ० रवींद्रनाथ मिश्र

हरे-भरे पहाड़ों के बीच बसे गाँववासियों को होली मनाने की बड़ी उत्सुकता है। इसके बारे में आठ दिन पूर्व मंदिर बनाने के निमित्त हुई बैठक में यह कहा गया था कि इस बार शिगमोत्सव में प्रत्येक घर से एक-एक व्यक्ति को आना ही है। न आने पर उसे दंडित किया जाएगा।

शिगमो कहने मात्र से ही गाँववालों के मन में खुशी की फुरफुरी दौड़ जाती है। वे मन ही मन में सोचने लगते हैं कि अगर जिंदा रहे तो अगले वर्ष शिगमोत्सव में खूब नाचने को मिलेगा। ऐसा सोचकर वे इतना नाचते हैं कि वहाँ की मिट्टी धूल बनकर उड़ने लगती है। -- पूनम के दिन होली, दूसरे दिन चोरोत्सव[1], तीसरे दिन देवी की पालकी, चौथे-पांचवे दिन करुल्यों[2], छठे दिन घोडेमोडणी और सातवें दिन देवताओं को स्नान-- इस तरह से सात दिन का शिगमोत्सव समाप्त होता है।

दो वर्ष पूर्व गाँव के सभी लोग मिलकर नाटक मंडली के साथ-साथ चार-पांच गाँव में जाकर घर-घर में नाटक खेलते थे। उसी वर्ष नाटक के आयोजन को लेकर एक छोटी-सी बात पर आपस में झगड़ा हो गया और तभी से यह योजना समाप्त हो गई। अब तो गाँव का कोई एक शराबी या बच्चों का समूह मुखौटे लगाकर घर-घर जाकर पैसा मांगते हैं बस !

पिछले वर्ष कुछ लोग ही होली खेलने के लिए बाहर निकले थे। इस वर्ष शिगमो के आयोजन हेतु बैठक करने से अच्छा हुआ, क्योंकि इसी बहाने नाम के वास्ते ही सही प्रत्येक घर से कम से कम एक-एक व्यक्ति तो आएगा। गाँव भी तो छोटा नहीं --- लगभग सौ घर तो होंगे ही।

'किसने बैठक बुलाकर 'आ बैल मुझे मार' की मुसीबत खड़ी कर दी।' कानग्या गाँवकार ने बच्चों के छोटे-छोटे समूह को देखकर अपने समीप बैठे उसप्या को इशारा करते हुए कहा।

'इस वर्ष होली का पेड़ कहीं देखा है ?' उसप्या ने बीड़ी को जोर से सुड़कते हुए पूछताछ की।

'क्या होली खेलने के लिए आता है आपो ? इस आम के पेड़ को जमीन पर गिराएंगे।' बांहों में न समाने वाले आम के पेड़ की तरफ उंगली दिखाते हुए समूह के एक लड़के ने उसप्या का मजाक उड़ाया और सभी खों ऽऽ खों ऽऽ करके हंसने लगे।

'कानग्या गाँवकार के बगीचे का कोकम का पेड़ इस वर्ष की होली के लिए अच्छा है।' एक ने अपना मत व्यक्त किया।

'उसे छोड़कर किसी दूसरे को काटो, अन्यथा वह काली कलूटी औरत गालियों की बौछार करेगी।'

'ईश्वर करे उसकी जीभ गल-गल कर गिर जाए।'

'एक जोर की आवाज कर सबको बुलाओ।' उत्तम ने गणपत से कहा। उत्तम गाँव के मुखिया का बेटा है। बाप के बीमार होने के कारण गाँव की संपूर्ण जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ पड़ी है।

गणपत ने आवाज दी --- जंगल काटने वाली पुकार --- पहाड़ों को पार करती हुई संपूर्ण जंगल में फैल गई -- जंगल का अंग-प्रत्यंग काँप उठा ---। पुकार व्यर्थ नहीं गई। जो नवयुवक एवं बच्चे आना चाहते थे, सभी इकट्ठे हो गए।

'किसी ने पेड़ देखा है ? तो पहले आपस में पूछ ताछ कर लो।' उसप्या ने वहाँ इकट्ठा हुए लोगों से कहा।

'मेरे साथ आओ। बहुत सारे पेड़ है।' गणपत ने कंधे पर कुल्हाड़ी रखकर आगे बढ़ते हुए कहा।

'किधर चलना है ? क्या शाम होने तक हम होली ही खोजते रहेंगे ?' उत्तम को क्रोध आया।

'अरे ! यह तो सच है। पिछले वर्ष होली ढूँढ़ते-ढूँढ़ते ऊँचे पहाड़ पर पहुँच गए थे। होली मिली, किंतु बहुत बड़ी थी और उसे उठाकर लाते समय बहुत कष्ट हुआ था।'

'इस बार मत डरो ! होली उठाने के लिए बहुत सारे लोग हैं।' गायों का समूह जिस प्रकार घास चरते-चरते पहाड़ों पर चढ़ता हैं, उसी प्रकार नवयुवकों के चार समूह विभिन्न

दिशाओं की ओर चल पड़े। चलने के पूर्व यह निर्णय लिया गया कि होली मिलने पर जोर की आवाज देकर एक दूसरे को सूचित करना है।

नवयुवकों के शोरगुल के कारण इधर-उधर वृक्षों पर बैठे पक्षियों का झुंड आकाश में उड़ते हुए चला गया--- कोयल की कूक बंद हो गई --। होली काटने के लिए हाथ उतावले हो रहे थे। कोयता से छोटी-छोटी झाड़ियों को साफकर रास्ता बनाते हुए लोग आगे बढ़ रहे थे। तालाब और झरने के ऊपर की पहाड़ियों को छान मारा लेकिन होली के अनुकूल एक भी पेड़ नहीं मिला सभी लोग निराश एवं हताश हो गए।

'अरे ! सब लोग इधर आओ ऽऽ --- नीचे की गली से किसी ने जोर से पुकारा --- उसकी आवाज़ सुनकर लोग नुकीले घासों की परवाह न करते हुए उसी प्रकार दौड़े जैसे जंगल में जानवर के शिकार होने पर अन्य शिकारी भागकर उसे देखने के लिए आते हैं।

गणपत को घेरकर सभी लोग चारों तरफ देखने लगे, लेकिन होली के अनुकूल वहाँ एक भी पेड़ दिखाई नहीं दिया।

'तुम लोग बंदर की भांति इधर-उधर क्या देख रहे हो ?

सुपारी के पेड़ की तरह झूमते हुए इस छोटे से आम के पेड़ को देखो।' गणपत ने बारकेलो के बगीचे में लगे आम के पेड़ की तरफ इशारा किया।

'किसी ने ठीक ही कहा है कि 'कमर पर मटका गाँव भर भटका।' आम के पेड़ का तना नीचे से ऊपर तक एक समान था।

'आम का पेड़ अच्छा है। घर की धरन के लिए भी अच्छा रहेगा।' पांडलो ने ललचाई नजरों से संपूर्ण पेड़ को देखा। क्योंकि पिछले कई वर्षों से वह लकड़ी चुराकर उसका व्यापार कर रहा था।

'तुमको घर की धरन के सिवा और कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। पूरा जंगल काटने के बाद भी तुम्हारा पेट नहीं भरा।' गणपत ने पांडलो पर व्यंग्य किया। 'होली की पूजा जल्दी करो। झगड़ा बाद में करना। दिन डूबने के पहले होली का पेड़ इधर से ले जाना है।' बारकेलो की बड़ी लड़की शेंवतू पास के तालाब से घड़ा भरकर घर में गई। अरे ! यह कैसा शोरगुल हो रहा है ? वह जल्दी-जल्दी पीछे के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई।

'शेंवतू, हम तुम्हारे आम के पेड़ को होली के लिए काट रहे हैं ऽऽ ऽऽ। काम पर से आने के बाद अपने बाप को बता देना।'

'उत्तम, क्या देखते हो ? आम के पेड़ की जल्दी पूजा करो।' 'पूजा कैसे करूँ,' ऊपर देखो, आम के पेड़ में बौर आकर उसमें टिकोरे लग गए हैं। इसे होली के लिए नहीं काटते हैं।

'होली के लिए पेड़ काटना है कि नहीं ? पुरानी बातों के पीछे क्या रखा है ? मन के अनुसार पेड़ न मिलने पर हम क्या कर सकते हैं ? क्या हमें होली नहीं मनानी हैं ?' गणपत ने अपना मत व्यक्त किया।

'हाँ यह तो सच है।' सभी लोगों ने उसके सुर में सुर मिलाया। उत्तम को भी ठीक लगा।

उत्तम ने चंदन-फूल डालकर आम के पेड़ की पूजा की। तिलग्या महार ने ढोलक बजाई। ह ऽऽ ह ऽऽ की आवाज से संपूर्ण वातावरण गुंजायमान हो गया। मुखिया का बेटा होने के नाते उत्तम को पहला वार करने का हक है। ज्योंहि उसने पहला वार किया कि आम का पेड़ कांप उठा --- तिनके तिनके जोड़कर घोंसला बनाने वाले कौए कांव-कांव करते हुए उड़कर कटहल के पेड़ पर बैठ गए। गणपत ने कुल्हाड़ी लेकर पेड़ काटना शुरू किया। बच्चों की नजर टिकारों पर जमी रही। आम का पेड़ कब गिरेगा ? इसकी सभी लोग आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे---

'अरे ! अभी दूसरी तरफ से काटो नहीं तो यह घर पर गिरेगा। घेरे पर गिरता है तो कोई बात नहीं ?' पेड़ को किस तरफ से काटना है और वह किधर गिरेगा इसकी बराबर जानकारी पांडल्या को है।

'दीदी, उनसे कहो कि हमारे आम के पेड़ को मत काटे'। विठू अपनी बहन से बार-बार कह रहा था। लेकिन शेंवतू को पूछने का साहस नहीं हुआ।

'इस समय माँ को आना चाहिए। शेंवतू मन ही मन सोच रही थी। खाली घड़ा उसके हाथ में था, और कुल्हाड़ी के एक-एक घाव उसके हृदय पर पड़ रहे थे। लेकिन वह घुपचाप खूँटे की भांति जड़वत् वहीं खड़ी रही। कुछ समय के पश्चात् आम का पेड़ उसकी नजरों के सामने ही कर-कराहट की आवाज करते हुए धम्म ऽऽ ऽऽ से जमीन पर गिर पड़ा --- धूल उड़ी -- कुछ टिकोरे बिथराकर और शेष बरामदे में चारों तरफ फैल गए' --- सभी लोग टिकोरे पर टूट पड़े। विठू भी टिकोरे उठाने जा ही रहा था कि शेंवतू ने उसके कंधे को पकड़कर अपनी तरफ खींच लिया।

शेंवतू का ध्यान टिकोरे पर नहीं बल्कि मोगरे के झाड़ पर था --- आधे घंटे पहले उसने मोगरे में घड़े भर पानी डाला था --- इन दिनों उस पर कहीं-कहीं कलियाँ लगी थी। मोगरा आम के पेड़ के नीचे तड़फड़ा रहा था--- उसे देखकर उसकी आंखों में आँसू भर आए--- और वह अस्वस्थ-सी हो गई -- दुखभरी नजरों से उसने बरामदे को चारों तरफ से देखा। आम के पेड़ की शाखा से पपीते का पेड़ जमीन पर गिर पड़ा था। पहली

बार फूल-फल आए नारियल के पेड़ का आधा भाग तहस-नहस हो गया था। वर्षा के पहले मामा के यहाँ से लाए हुए नीम के बिरवे का अस्तित्व ही समाप्त हो गया था।

'साले तुझे खाने की पड़ी है? टहनियाँ कौन छाँटेगा ? काटते-काटते गणपत को पसीना आ गया था। उसने जोर से डांटा तो दो-तीन लोग कोयता लेकर टहनियाँ काटने लगे।

होली साफ करते-करते दिन डूबने को आ गया। होली का कूँचा बाँधा गया। तिलग्या महार ने ढोलकी बजा दी --- संपूर्ण पठार उसकी आवाज से गनगनाने लगा --- सभी लोगों के अंगों में होली उठाकर ले जाने का जोश भर गया -- इस वर्ष की होली बड़ी मोटी है, फिर भी लोगों ने उसे बड़ी आसानी से उठा लिया।

होली ऽऽ रे होली ऽऽ
शिगम्या की होली ऽऽ

सभी लोगों ने होली को उठाकर रास्ते भर नाचते-गाते हुए देवालय के मैदान में लाकर रख दिया। देवालय के ठीक सामने पीपल का पेड़ और नीचे के रास्तें पर देवालय का सरोवर था। ऊपरी रास्ते पर विभिन्न देवी-देवताओं की पत्थर की मूर्तियाँ और मंदिर के ठीक-पीछे देवालय का खेत, जिसमें वर्षा के दिनों में गाँव का मुखिया फसल उगाकर उसका आधा भाग स्वयं लेकर शेष मंदिर को देता है। होली का नाच-गान, कठघोड़वा का नृत्य --- और अंतिम दिन का रोमट आदि सब कुछ देवालय के मैदान में ही होता है।

बारकेलो गदहबेरा के समय घर आया। रोज की भांति थोड़ा शराब पिए था --- शेंवतू ने दौड़कर आम के पेड़ की खबर सुनाई तो उसका कलेजा धक्क-धक्क करने लगा। क्रोध के कारण उसके नथुने फूल आए। खाने के डिब्बे को वहीं फेंककर झटके से पिछवाड़े की ओर बरामदे में आया तो देखा कि वहाँ तूफान के बाद जैसी स्थिति मौजूद थी ------- सब कुछ सर्वनाश होने के कारण सगुणे गालियाँ बके जा रही थी। बारकेलो ने संपूर्ण बरामदे पर एक दृष्टि डाली तो देखा कि पहली बार फूल फल आए नारियल का पेड़---- पपीते का पेड़ - छेरा आदि सबकुछ तहस-नहस हो गया था। बिथराए हुए टिकोरों का ढेर देखकर उसके माथे की नसें तन गई -- और क्रोध के कारण उसके हृदय में तिरस्कार की लहरें उठने लगी --- लेकिन सब कुछ सहते हुए वह चुप था।

बारकेलो दुःखी मन से धीरे-धीरे पेड़ के मूल के पास जाकर खड़ा हो गया। मूल का ऊपरी हिस्सा लाशा से भर गया था --- उसने क्या सोचा ? कौन जानता है ? उसका गला भर आया ---- गत वर्ष के पहले उसमें पहली बार टिकोरे आए थे, तो उसने दो बार

हजार डेढ़ हजार टिकोरे बेचे थे। इससे मिले हुए पैसों से घर का सामान, शेंवतू के कानों की बाली और इसके अतिरिक्त बिढ़ू को जांघिया भी खरीदा था। शेंवतू बाली पहनकर नाचती हुई सारे गाँव को दिखा आई थीं --- बिढ़ू केवल नहाने के वक्त ही जांघिया निकालकर रखता था --- इस वर्ष भी उसे हजार के ऊपर टिकोरे मिलने की उम्मीद थी। इसके पूर्व किसी ने उसे बताया था कि पेड़ की जड़ में नमक डालने से टिकोरे नहीं झड़ेंगे। इसलिए उसने एक डिब्बा नमक जड़ में डालकर मिट्टी से ढँक दिया था।

'मर जाने दो ! होली खेलने को न मिले। बौर आए हुए पेड़ को कहीं होली के लिए काटते हैं ? अब मैं देखूँगा कि ये गाँव वाले कैसे होली डालते हैं ?' बारकेलो गुस्से में बड़बड़ा रहा था।

'शाम के समय ऐसा बुरा मत बोलो --- जो कुछ हो गया, होने दो ---' सगुणे उसे मना रही थी।'

'तुम चुप बैठो' बारकेलो ने सगुणे को डांटा। शेंवतू भय के कारण चुप बैठी। उसे मालूम था कि बाबा को गुस्सा आने पर जो कुछ हाथ में आता है उसी से --- नहाने के पहले ही बारकेलो कहीं गायब हो गया।

साढ़े सात-आठ बजे ढोलक की आवाज सुनाई दी -- झांझ-ताल बजने लगे। सैकड़ों लोग होली देखने के लिए जमा हो गए। बढ़ई बसुला लेकर खेत की मेंड़ पर आकर बैठ गया। पूनम की चांदनी रात होते हुए भी बड़े-बूढ़े गैस लेकर जगह-जगह मेड़ पर बैठ गए।

पहले होली को दोनों हाथों के बीच लेकर खेलने का निश्चय किया गया। होली की जड़ की तरफ युवक और पुलई की ओर बच्चे खड़े हो गए। होली को पकड़ने के लिए इतने लोग एकत्र हो गए कि उसको हाथ लगाना भी मुश्किल हो गया। बलिराम के खंबे को हाथ लगाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति उत्सुक दिखाई दे रहा था। होली को उठाकर लोग झूमने लगे। ढोलक खूब तेज बजने लगी। इसी के साथ होली को लेकर झूमने की प्रक्रिया तेज हो गई जिसके कारण हाथ की चमड़ी और पत्थर लगने के कारण पाँव की चमड़ी खुरच गई। खुरचने के कारण हाथ-पांव लहुलूहान हो गए लेकिन फिर भी बिना उसकी परवाह किए लोग मदहोश होकर होली को लेकर झूम रहे थे। देखने वाले भी जोर-जोर की आवाज देकर उन लोगों का उत्साह बढ़ा रहे थे।

'अभी थोड़ा रूको। पचारी लगाकर होली खेलना है।' लगभग एक घंटे होली खेलने के बाद कई लोगों ने अपना मत व्यक्त किया। होली नीचे रख दी गई।

'हम सब बच्चे पुलई की तरफ और बड़े लोग जड़ की तरफ रहेंगे। देखते हैं कौन जीतता है ?' बड़े लोगों में से कोई नहीं उठा।

'डर गए क्या ?' यह सुनकर आराम से बैठे बड़े लोगों के भीतर जोश आ गया।

पुन: ढोल बजने लगी। ताल-मंजीरा झुनझुनाने लगा।

पकड़ों ऽऽ ऽऽ की आवाज देकर बच्चों और बड़े लोगों के बीच प्रतियोगिता शुरू हो गई --- लेकिन बच्चों ने बाजी मार ली और बड़े लोगों को पीछे ढकेल दिया। अभी हमारी दाल नही गलेगी यह समझकर किसी ने सुझाव दिया कि हम सब पुलई की तरफ रहेंगे। बच्चों ने इसे स्वीकार किया लेकिन फिर भी वे लोग हार गए।

'जीत गए भई जीत गए' कहकर युवक नाचने लगे। सभी लोग हो हल्ला मचाकर आनंद से झूमने लगे।

'अभी बस करो। होली को साफ करना है। मुझे नींद आ रही है। चांद माथे पर आ गया।' होली खेलने वालों को खड़े देखकर सदू बढ़ई ने कहा। सभी लोग थकान महसूस कर रहे थे -- फिर भी एक घंटा और होली खेल सकते थे। होली नीचे रख दी गई। बढ़ई को ठीक से दिखाई नहीं देता था, इसलिए किसी ने गैस लाकर उसके सामने रख दिया। सदू बढ़ई ने होली को साफ करना शुरू कर दिया----

'सदू बढ़ई, होली को बसुला मत लगाना?' बारकेलो के हाथ में कुल्हाड़ी देखकर बढ़ई मामा थर-थर कांपने लगा--- क्या हुआ किसी को मालूम नहीं पड़ा। जो लोग खुशी से नाच रहे थे, उनकी नजर बारकेलो के कुल्हाड़ी पर पड़ी तो वे भयभीत हो गए।

'कौन हैं वे गाँवकार, जिन्होंने मेरे बाड़े से आम का पेड़ काटा, किस हक से काटकर लाए ? चोर कहीं के।'

'अरे, गाँवकार को चोर मत कहो ? पहले ही बोलता हूँ।' भीड़ में से किसी ने कहा।

'क्या करोगे ? शरीर में ताकत है तो आगे आओ। एक-एक को देख लूँगा।' बारकेलो ने ऊँची आवाज में कहा।

'अभी बहुत हो गया।'

'बहुत हो गया ! बौर लगे आम के पेड़ को काटकर क्यों लाए ? अब तुम्हारा शास्त्र कहाँ गया ?'

'ईश्वर की मर्जी है तो हम क्या करें ?' कानग्या गाँवकार भीड़ को चीरकर आगे आ गया।

'तुम चुप बैठो। अपने काजू के बगीचे में मौजूद कोकम के पेड़ को कभी अपनी मर्जी से नहीं दिया। मुझे सीधा-साधा समझकर परेशान करना चाहते हो ?

'जाने दो बारकेलो। बच्चों ने लड़कपन कर दिया। जो हो गया सो हो गया'। सदू बढ़ई मामा ने धैर्य धारण कर कहा।

ये बच्चे हैं ? क्या झाड़े-पेशाब में लोट रहे हैं ? इनके बाप ने कभी किसी का भला किया है कि ये करेंगे ?

है ! हमारे बाप के ऊपर मत चढ़ो।' सभी बच्चे उसकी तरफ दौड़ पड़े।

'आगे बढ़े तो एक-एक को कुल्हाड़ी से काटकर रख दूँगा।' कुल्हाड़ी को संभालते हुए क्रोध में आकर बारकेलो होली के ऊपर वार करने लगा। थोड़ी देर वार करने के बाद उसकी पुलई अलग हो गई। जिसे देखकर लोग चकित हो गए कि बारकेलो यह क्या कर रहा है ?

'मारो-मारो --- मुंड़ी मरोड़ दो।' उत्तम बिना और देर किए बाण की भाँति भीड़ से बाहर निकलकर आया और जल्दी से झपटकर उसकी कुल्हाड़ी को पकड़ लिया--- दोनों आपस में झगड़ने लगे। उत्तम ने उसके हाथ से कुल्हाड़ी छीनकर बारकेलो को मारने के लिए उठाया। किसी ने दौड़कर उसके हाथ से कुल्हाड़ी छीन ली।

'मार डालो'। उत्तम ने आवाज दी। सभी लोग बारकेलो के ऊपर टूट पड़े। चारो ओर शोरगुल मच गया।

बढ़ई मामा भीड़ से बाहर निकला। कानग्या गाँवकार को किसी ने नहीं सुना। छोटे-छोटे भयभीत होकर भागने लगे--- उस भीड़ में बिदू ने बाबा ! बाबा ! की चीख लगाई। बारकेलो के पेट और पीठ पर सभी लोग मार रहे थे --- लेकिन उसने किसी प्रकार का प्रतिकार नहीं किया। घाव के कारण पेट में खून जमा हो गया और नाक-मुँह से गिरने लगा। बारकेलो की हालत देखकर कानग्या ने आवाज दी---

'छोड़ दो उसे, कहीं मर गया तो होली सदा के लिए बंद हो जाएगी ---' लेकिन उसकी आवाज किसी को सुनाई नहीं दी।

'अरे! छोड़ दो उसे --- पुन: गला फाड़कर चिल्लाया, कुछ समय के बाद लोग पीछे हट गए। बारकेलो धूल-धूसरित जमीन पर लेटा हुआ था।

सभी लोग शांत हो गए --- बारकेलो को हिलते-डुलते न देखकर उन सबका हृदय धड़कने लगा ---- वहाँ किसी की जाने की हिम्मत नहीं हुई। लोग डरे और सहमे हुए थे।

कानग्य गाँवकार साहस जुटाकर बारकेलो के पास गया और उसका शरीर पलटा।

'अरे ! पापियों ! लगता है कि यह मर गया। कोई तो उसके कच्चे को दबाओ। कानग्या गाँवकार भयभीत हो गया। एक ने बारकेलो के कच्चे को खूब जोर से दबाया और दूसरे

ने एक घड़ा पानी सिर पर डाला, फिर भी वह हिला-डुला नहीं। सब लोग भयभीत होकर काँपने लगे।

'अभी हम सभी पर आफत आ गई।' यह सोचकर कुछ लोग बिना कुछ कहे-सुने वहाँ से धीरे-धीरे खिसकने लगे।

कुछ समय पूर्व पूनम की चांदनी रात ढोलक-मंजीरे और सांझ के ताल पर मग्न होकर नाच रही थी,

लेकिन अब यह खेत दुःख के सागर में डूबा हुआ था। बारकेलो को खोजती हुई उसकी पत्नी और बेटी शेंवतू भीड़ को चीरती हुई चीत्कार मारकर उसके ऊपर गिर पड़ी --- पूनम की चांदनी से सनी हुई उनकी चीत्कार ने खेत के उस पार गाँववालों को जगा दिया ---- एक दूसरे का बलि लेने वाले बलिराम और बारकेलो चिरनिद्रा में सो गए। दोनों के शरीर पर चांदनी रात का कफन पड़ा हुआ था ---

हाँ, अब इसके बाद उत्तम होली के पेड़ की पूजा नहीं करेगा --- तिलगो महार ढोल नहीं बजाएगा --- यह गाँव होली नहीं खेलेगा --- एक सूतक हवा का झोंका गाँवभर में छा गया --- लेकिन एक खुशियाली हवा की लहर संपूर्ण जंगल में फैल गई।

पाद-टिप्पणी

1. चोरात्सव - शिगमोत्सव के दूसरे दिन और कई गाँवों में सातवें दिन चोरोत्सव मनाया जाता है जिसमें घर-घर में लोग बने हुए चोरों की पूजा करते हैं। यह शिगमोत्सव महत्वपूर्ण अंग है।

2. करुल्यो - देवी का एक रूप जिसका रूप धारण कर गाँव के कतिपय युवक घर-घर जाते हैं जिसकी लोग पूजा करते हैं।